ऋषि पंचमी व्रत कथा PDF

प्राचीन कथा के अनुसार, विदर्भ देश में उत्तंक नामक एक सदाचारी ब्राह्मण देवता रहते थे। उनकी पत्नी बहुत पतिव्रता थी, जिसका नाम सुशीला था। उस ब्राह्मण के दो बच्चे थे, एक बेटा और एक बेटी। जब वह विवाह योग्य हो गई तो उसने उस कन्या का विवाह समान वंश के दूल्हे से कर दिया। सौभाग्य से कुछ ही दिनों बाद वह विधवा हो गयी। दुखी ब्राह्मण दम्पति अपनी पुत्री के साथ गंगा के तट पर एक कुटिया में रहने लगे।

एक दिन एक ब्राह्मण कन्या सो रही थी तभी उसका शरीर कीड़ों से भर गया। लड़की ने सारी बात अपनी मां को बताई। माता ने अपने पति को सारी बात बतायी और पूछा प्राणनाथ! मेरी साधु पुत्री की इस गति का क्या कारण है?

उत्तंक जी ने समाधि से इस घटना का पता लगाया और बताया: यह कन्या पूर्व जन्म में भी ब्राह्मणी थी। रजस्वला आते ही उन्होंने बर्तनों को छू लिया था। इस जन्म में भी लोगों के आग्रह के बावजूद उन्होंने भाद्रपद शुक्ल पंचमी यानी ऋषि पंचमी का व्रत नहीं किया। इसलिए उसके शरीर में कीड़े हैं।

धार्मिक ग्रंथों का मानना है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन चांडालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान अपवित्र होती है। चौथे दिन स्नान करके उसे शुद्ध किया जाता है। यदि वह अब भी सच्चे मन से ऋषि पंचमी का व्रत करेगा तो उसके सभी दुःख दूर हो जायेंगे और अगले जन्म में उसे सौभाग्य प्राप्त होगा।

अपने पिता की आज्ञा से पुत्री ने ऋषि पंचमी का व्रत रखा और विधि–विधान से पूजा की। व्रत के प्रभाव से वह सभी दुखों से मुक्त हो गई। अगले जन्म में उन्हें सौभाग्य के साथ–साथ असीमित सुख भी प्राप्त हुआ।

pdfinbox.com